

# दान में प्राप्त

दाता श्री पं. रामचन्द्र शर्मा  
सोलहू राम पुस्तकालय  
पता सराय बलमद्र  
रेवाड़ी (गुड़गावां)

Acc. No. → 50596

पञ्चाध्यायी ।  
मन्दादास कृत ।



पञ्चाक्षरी

नन्ददास कुत

(संवत् १८८१)







Acco No: → 50596

पञ्चादयायी

नन्ददासकृत



श्री कृष्णाय नमः ॥ वंदन करै कृपानिधान श्री  
 प्रुक प्रुभ कारी ॥ सुध जोति मय रूप सदा सं  
 दर आवी कारी ॥ १ ॥ हरि तिलार समत मुदित  
 नित विचरत जग मै ॥ सुदुत गतिक द्रुन हि न  
 सुट कट्टे निक सेन ग मै ॥ २ ॥ नितोत्पल दल  
 स्याम संग नव जोवन भ्राजै ॥ कटिल सुतल क  
 मुषक मल मनौ अलि अवलै विराजै ॥ ३ ॥ ल  
 तित विसाल सुभा लदि पत जनु निकर नि  
 साकर ॥ कृष्ण भगति प्रतिबंधति मिर कुंको  
 टि दिवाकर ॥ ४ ॥ कृपारंगर सनम यन नयन रा



उतरत नारे॥ कृष्ण रसा सब पान अलस  
 कछु घुम घुमारे॥ ५॥ प्रवतन कृष्ण रस भव  
 न गंगे में उल्लसत दर सैं॥ प्रेमानंद मिली स  
 मंद सुसकनि मधुकर सैं॥ ६॥ उनतना सा अ  
 धर विंव सब की छवि छीनी॥ तिन विचन  
 दुत भांति लसति जु कछु कमसि भीनी॥ ७॥  
 कंवु कंठ की रेख देख हरि धर्म प्रकासैं॥ का  
 म के औधम दलो भयो हति हि निरषतना सैं॥ ८॥  
 पुरवर्ष रसति छवि कि भीर कछु वरनि न जाई  
 जिहि भीतर जगमगात निरंतर कंवर कन्हौ



र्षी॥ सुंदर उदर उदार रोमावली रात त अति  
 भारी॥ द्वि यो सरोवर रस भरि चली जनु उम  
 गिप नारी॥ १०॥ तार सकी कुंडिका नाभि सोभि  
 त असागहरी॥ विवली तामैल नित भ्रांति ज  
 नु उपजितिलहरी॥ ११॥ गुठ जानु आना नुवा  
 ह मद गात गति लोले॥ गंगा दिक् नुप विवक  
 र त अवनी महि डोले॥ १२॥ जव दिन मनि  
 श्री कृष्ण दग नि तैद रि भए दरि॥ पक्षि रि प  
 स्यो अंध्या रस कल संसार घम डिघुरि॥ १३॥  
 तिमिर ग्रसित सब लो क ओ क देषि दुषित द



याकर॥ पगट कीयो अद्भुत प्रभाव भागवत  
विभाकर॥ १४॥ ताही मै पुरि निअति रहस्य  
हय च्या ध्याई॥ तन मै तै से पंच प्रण असे स  
क मुनि गाई॥ १५॥ परमर सिकर कुमि व मोहि  
जिनि अज्ञा दीनी॥ ताते मै यहु कथा यथा म  
ति भाषा कीनी॥ १६॥ अक मुनि रूप अनूप  
हे कहा वरनै कवि नंद॥ अव वंद दावन वरणिंद्र  
जहां वंदवन चंद॥ १७॥ श्री वंद दावन चिद्वन  
कहुं विवरनि न जाई॥ कल्मली लिलतली  
ला कै का उधरि ह्यो जउतार्ई॥ १८॥ जहां न



३ पैचागः गमगल ताकुं जवी रुध तरा जैते ॥ नहि  
 न कातलगु प्रभाव सदा सोभित है ते ते ॥ १८ ॥ स  
 कल जंतु अवि रुध ज हा हरि मग सें चें ग च  
 रहि ॥ काम को ध प्रयत्नो भरुत तली लानु  
 सरहि ॥ १९ ॥ सवरितु संत तव सतल सत हो  
 दिन दिन सोभा ॥ अनवन निजा की विभक्ति क  
 रि सोभित सोभा ॥ २० ॥ ज्यौ लखि मीनि ज रूप  
 अनुप चरन सेवति नित ॥ भुविल सत जु वि  
 भुति जगत जगमणि रहि जित किंत ॥ २१ ॥ श्री  
 अनंत महिमा अनंत को वरन स क क वि ॥

३

३



संश्लेष कर्षणसौ ककु ककु कहि श्रीमुख जाकी  
हृ वि ॥ २१ ॥ देवनमें श्रीरमा रवनमें नाराय  
ण प्रभु जस ॥ वननिमें श्रीवंदावन सुदेस  
सवदिन सौ भततस ॥ २२ ॥ यावन कीवर  
वान कयावनि हि वनि आवै ॥ सेसमहेस सु  
रे सगनैसन पारहि पावै ॥ २३ ॥ जहां जैति  
कहु जाति कलपद्रुमससु सब लायेक ॥ चिं  
तामणि समभुमि सबनिचित तफल दाइ  
क ॥ २४ ॥ तिनमधि ई कहु कलपतरु ल



पंच  
६

गिराँही जगमगा जोती ॥ पत्रमूलफलफलफल  
सकलहीरामगामोती ॥ १६ ॥ तिनमधिति  
नकं गंधलवधुमसगानकरतमालि  
वरकिंनरगंधर्वमरसनपरकीन्येवलि  
॥ २७ ॥ ममलतफुहीसुषगुहीपरतिरहति  
नित ॥ रासरसिकसुंदरपिपकोस्रदूरक  
रनहित ॥ २८ ॥ उंहिसुरतरुमधिअवरस  
कमद्रुतकविछाजे ॥ साधादलफलफल  
निहारिप्रतिविंवविंघांराजे ॥ २९ ॥ तातरको  
मलकनकभुमिमनिमयमोहतिमनु ॥

ल

६



दिषियतसवप्रतिविंवमनोध्यामैंदुसरो  
वनु॥ ३०॥ तहोई कमन्तिमयवितस्त्रिकौ  
शंकुभगप्रति॥ तापरषोउसदत्तसरो  
जसदत्तचक्राकृत॥ ३१॥ अधिकमनीय  
करनि कासवसुषसुंदरकंदर॥ तहोरा  
जतव्रजतैराजकुंवरबारसिकपुरंदर॥ ३२॥  
निकरविभाकरदुतिमेटतसुभकौस्त  
भमनिअस॥ हरिजुकोठररुचिनिवि  
उविषैसौलागतउजस॥ ३३॥ मोहनअ  
द्रुतरूपकहिनआवैविताकी॥ अषित



पंचा ५ अंउ व्यापी जुव ह्य आभा है जा की ॥ ३४ ॥  
 परमात्मा धर्म करि सब के अंतरुतामी  
 ॥ नारायन भगवान धर्म करि सब के ज्ञा  
 मी ॥ ३५ ॥ बाल कृमा रघौं गउ धर्म आ कं  
 तिल तिल ततनु ॥ धर्म नित्य किंशो रका  
 न्मु मोहत सब को मनु ॥ ३६ ॥ अम अद्रुत  
 गोपाल बाल सब काल वसतत हो ॥ यहो  
 ते श्री वं कुंठ बिभौ कुंठित लागत जु हो ॥ ३७  
 जदपि सहज माधरी विप्रिन सब दिन सु  
 षदाई ॥ तदपि रंगीली सरद समय मिति



अति कविपारि ॥ ३२ ॥ ज्यों अमोलेन न गजग  
 मगारि सुंदर जराय संग ॥ रूप वंत गुन वंत  
 वहारि भुवन भुवित संग ॥ ३५ ॥ ए जनी मुख  
 सुषटे तिल तिल प्रकृतित जहा मालती  
 ॥ ज्यों नव जोवन पारित सुवति बालती ॥  
 ॥ कवि सों फुल आवर फुल अ सल गी लुनी  
 आरि ॥ मनुहु सरद की कपा कविली विहस  
 ति आरि ॥ ४२ ॥ ताही छिन उडरा ज उदितर  
 सस सहाई क ॥ कुंम कुंम मंडित प्रिया वद  
 न जन नागर नायक ॥ ४२ ॥ कौमल कि रं



पंचा.  
६

निम्नरुनिमैवनमैव्यापिवनियौ॥मनुसि  
जवेत्प्योफागद्यमडिडुडिरह्योगुलालजमं  
॥४२॥फटिकछटीसीकिरनिकुंजरंधुनि  
वनिआई॥मानुहुवितनवितानैदेसत  
नावतनाई॥४४॥मंदमंदचलिचारुचं  
डुमाससफुविपाई॥डुककतिहेजनुरमा  
रमनप्रियकौतिकआई॥४५॥तवलीनीक  
रकमलजागमायासीमुरली॥अद्यटितद्य  
टिनाचतुरस्रहरिस्रध्यसुरजुली॥४६॥  
ताकीधुनिमैनिगमस्रगमप्रगटेवउना

सु

६



गर॥ नादब्रह्म की जननी मोहनी सब सुष  
मागर॥ ४७॥ पुनि मोहन सौ क कुरकमि  
तिन कलत गान कि यो अस॥ वामंतो चनवा

वि३

ततिन कौ मन मोहन हरन होइ जस॥ ४८  
सुनित चली व जव धु गीत धनि कौ मारा  
गहि॥ भवन भीति दुम कुंज पुंज कित हं अ  
ट की नहि॥ ४९॥ नाद अस मत कौ पंच ए  
भस्यो सुदिम भारी॥ तिहि वज्र तिय मतै  
चलै आन कौ उनहि अधिकारी॥ ५०॥ सु  
ह प्रेम मय रूप पंच भुति कतै न्यारी॥ ति



पंचा०  
७

नहि कहा कौ दुग है जोति सि जगत दुह्यारी पर  
जै रु कि ग ई धर अति धीर गुन मय सरीख  
स॥ पुनि पाप प्रारब्ध स च्योतन नहि न प च्यो  
र स॥ ५२॥ परम दु सह श्री कृष्ण विरह दुष व्या  
प्योति न मै॥ कोटि वर धर्म गिन र क भोग ये  
छिन मै॥ ५३॥ पुनि रंच क धरि ध्या न पि य  
हि परि रंभ दि यो ब्रव॥ कोटि स्वर्ग सुष भुग  
ति दान की न्ये म ग त्त सव॥ ५४॥ पित्त लि  
पात्र पाहन पर सि कं चन दे सो है॥ नंद सुव  
न सो पर म प्रेम मर हो अचिर ज को है॥ ५५॥



तेषु नि ति ह म ग च त्नी रं गी त्नी त त्ति ग ह स  
 ग म ॥ ज नु पिं ज र नि तें घु टे कु टे न व प्रे म वि  
 हं ग म ॥ ५६ ॥ सा व न स रि ता रु क हि क रै तौ  
 ज त न को ठु क्क ति ॥ क र्म ग हे जिन के म न त  
 क्यो रु क हि क्क ग म ग ति ॥ ५७ ॥ ज द पि क  
 हं के क हं व धु नु म्मा भ र न व न्ना ए ॥ हरि पि य  
 पै म नु स र त ज हा के त हां चि त्ति म्मा ए ॥ ५८  
 प र म भ्रा ग व त त्ति र सि क ज प री दि त्ति रा जा  
 प्र स न्न क री र स पृ ष्ठ क र न नि ज स ष के का ज  
 ॥ ५९ ॥ श्री भ्रा ग व त को पा त्र ज्ञा नि ज ग के



पंचा. हितकारी॥ उदरदरीमें करी को नृताकी  
रषवारी॥ ६०॥ जाको सुंदर स्याम कथा किन  
किन नई लो गे॥ ज्यो लपट पर जु वति वात सु  
नि सुति अनुरा गे॥ ६१॥ हो मुनि के गुण मय  
सौर पर हरि पाए हरि जो निमज्ज के वनी  
य को नृनहि ब्रह्म भाव करि॥ ६२॥ तव श्री  
शुक देव देव रह्या अचिर जु नही॥ सर्व भाव  
भगवान को नृतिन के हि ये माही॥ ६३॥ पर  
मदृष्टि सु पातन वातन प्रनतें निंक अति॥  
जोगिन को जो दल भसुल भही पाई सो गति



॥ ६४ ॥ एहरि रस ओषी गोषी सब विष न ते  
 न्यारी ॥ कमल नयन गोविंद चंद की प्रान  
 पियारी ॥ ६५ ॥ तिन के नुपर नाद सुने जब  
 रम स्वहाए ॥ तव हरि के मन नयन सिमिटि  
 सब सब न निआए ॥ ६६ ॥ ऊनुक ऊनुक पुनि  
 छे विलिभांति सब प्रगट भए जब ॥ पिय के कं  
 ग अंग समिटि ले छे विले नैन नित तव ॥ ६७  
 सब के मुष अवलोकित पिय के नैन नव नै री  
 ॥ वहेत सरदस सिमा ऊर्वी है चकोर ज्यों ॥ ६८  
 ॥ अति आदर करित इम इ चहूँ दि सदा



ॐ  
पंचा०

प्रनु॥ फविलि फटनि मिमि फे की प्रंजतल  
धनमुरति जनु॥ ६॥ ॐ॥ नागरगुरु नंदनंद चं  
दहसिमंदमंदतर्ववाले वांके वयन प्रेम के प  
एम प्रयन सब॥ १०॥ उतलस कोय। हस्वभा  
ववांके एस पावे वंके चेहनि प्ररुके हनि  
वंके प्रति एसहि वटवै॥ ११॥ लातरसातल के  
विंगवचन सुनि चकत भई यौ॥ बालमगी  
सीमातल सघन बन भुलि परी दुयां॥ १२॥ मंद  
परस पर हसीतल सीति रछी अप्रियं अप्रस  
॥ रूप उदधि इ तरांति रंगीली मीन पंति ज

ॐ



स॥७३॥ तव प्रिय कह्यो घर जाहु प्रधिक  
बि तचिंता वाढी॥ पुतरिनि कीसी प्रांति र  
हि गारु कटकटा टी॥७४॥ दुष के बोझ  
विस्वी वागीवनै चली नालुसी॥ प्रल कप्र  
लिन के भार नमि तमानों कमल मालुसी  
७५॥ हिय भरि बिहरे तासु सासनि संग आ  
वति ऊर॥ बलै कफु के मुर जाइ मधु प्रेर  
घर बिबवर॥७६॥ तव बाली वज्र बालना  
ल मोहन प्रनुरागी॥ सुंदरा दगदगि रागि  
रि घरहि माधेरी लागी॥७७॥ प्रहो प्रहो



पंचा.  
१.

मोहनप्रानानाथसुंदरसुषदाईक॥ कुख  
चनजिनिकहोनाहिनएतुमहरेल्लाईक॥  
७८॥ जबकोउपुष्टैधर्मतवताकौंकहिह  
पिय॥ विनहीपुष्टैधर्मकितकौंकहि  
एदहिहिय॥ ७९॥ धर्मनेमजपतपव्रत  
कोसंवफलहिबतावै॥ यहकहेनाहिन  
सुनिजुफलफिरीधर्मसिषावै॥ ८०॥ मरुतु  
महरोयहरूपधर्मकेधर्महिमाहे॥ घरमेको  
तियधर्मभरमयागप्रगेकोहे॥ ८१॥ तैसिहि  
पियकीमुरलीजुरलीगप्रधरसुधारस



सुनिनिजधर्मनतजैतरुनिविभुवनमैको  
 उप्रस॥२२॥ नगनकौधर्मनरह्योपुलकि  
 तनचलेवैरतै॥ षगमगगोबकुमकुंककु  
 तेरहेकौरतै॥ २३॥ सुनिगोपिनिकेप्रेम  
 वचनग्राचसीलागीजिय॥ पछरिचलेयो  
 नवनीतमीतनवनीतसदसहिहय॥ २४॥ वि  
 हसिमिलेनंदत्नातनिरषिवजवातनवि  
 रहवस॥ जदपिउप्रात्मारामरमतभरपर  
 मप्रमवस॥ २५॥ विहरतविपिनिविहार  
 उदारनवतनंदनंद॥ नवकुंमकुंमघन



चंचा ॥ सारु चारु चर्चिततन चंदन ॥ ८६ ॥ गोपीत  
११ नगनगोहनमोहनतलातलवनेयेयों ॥ अप्रपने  
दुति के उउगन उटुपतिघनषेतनतज्यों ॥ ८  
७ ॥ कुंजनकुंजनडोतलनिजनुघननप्राव  
नि ॥ लोचनविषितचकोरनि कैचितच  
पवटावनि ॥ ८८ ॥ सुभगसरितकेतिरधीर  
वतनवीरगसतहों ॥ कोमलमलतयसमी  
रकेविनि कोमहाभीरजहों ॥ ८९ ॥ कुसु  
मधुरधंध्यारिकुंजधविपुंजनिष्काई ॥ गुं  
जतमंजुप्रतिनंदवेनुजनवजतिवध्याई ॥



ॐ०॥ इतमह कतिमातली चारुचंपकचि  
 तचौरत॥ इतघनसारुतुसारमिहनीमंदार  
 ऊकोरत॥ ॐ१॥ इततनवंगनवांगयेलिनइत  
 ऊलिनरहीरस॥ इतकरवककेवराकेतकी  
 गंधवंधवस॥ ॐ२॥ इततुलसीकाविउलन  
 सीकादितपरमलतपट॥ इतकमोदगुप्रा  
 मोदगोदभारिभारिसूषदपट॥ ॐ३॥ उजुल  
 मदुलबालुकापुलिनप्रतिप्रमसुहा३॥  
 जमुनाजुनिजकारिसुठारप्रपनैहाथवना  
 ३॥ ॐ४॥ विलसतविविधिविलासहासनी



पंचा.  
१२

बीकुचपरसतसरसतप्रेमप्रनंगरंगनव  
घननज्योवरसत॥ १५ ॥ तवप्रयोयहाक  
मपचसरकरहेताके॥ वृद्धादिककोजी  
तिवटिरह्योप्रतिमदुजाके॥ १६ ॥ निरधि  
वज्रवधुसंगरंगभीन्येकिशोरतनु॥ हरिम  
नमथकेरिमथ्योउत्तटियामनमथकोम  
नु॥ १७ ॥ मुरफिपह्योतहामयनकदंध्यः  
नकहंविमिषवर॥ रतिदेषिपतकीदसाभी  
तभरंमारतिउरकर॥ १८ ॥ पुनिपुनिपिय  
हिप्रतिगतिरोवतिप्रनिप्रनुरागी॥ मद



न कै वदन चुवाइ अंमृत मृत भरि हनै भा  
गी ॥ १०० ॥ असे अंमृत मोहनै प्रिय को मि  
लित गोपदुलारी ॥ अंचर जु नहि जोगवै

१३

हो शिरि धर जु कीप्यारी ॥ १०१ ॥ रूप मरी  
गुन मरी प्रभु प्रेम प्रेम बस ॥ क्यों न कै अ  
भिमान को न भगवान जिन कै वस ॥ १०२ ॥ तु  
हो नदी नीरग प्री रत हो भक्त मवरी परई ॥  
कित्ति हित सति न परै परै तो ह्वि नहि  
करई ॥ १०३ ॥ प्रेम पुत्र वर्धन धै कै काज व्रत  
राकुं वर प्रिय ॥ मंजु कै मंत न कदु रे प्रति



पंचा०

१३

प्रेमभरिहिय ॥ १०३ ॥ मधु रवस्तु जैसं धातनि  
रंता सुष तोभारी ॥ वीचवीच कटुक प्रसन्न  
तिक्त प्रतिसेरु चिकारी ॥ १०४ ॥ ह्यो पटपट  
कैदिये निपटही रसहि परै रंगतै सेहि रंच  
कविरहु प्रेमके पंजबट तज्यंग ॥ १०५ ॥ जिन  
नकहं नैनन मेघबोट कौटिक जुगजाही  
जिनकहं गहवन कंज प्रोट दुषगन नाना  
ही ॥ १०६ ॥ ठगि सिरही बंजवा लल्लो लल्लिगि रिध  
रपिय विनयौ ॥ निधन महान धन पातवही  
ह्यो जारभरि यौ ॥ १०७ ॥ दे गरी विरह विकल

३

१३



मनुवुं ऊतद्रुमवेत्नीवनु ॥ कोतुडु कोचैत  
न्यक फुन ज्ञानिहिविरही जन ॥ १०८ ॥ हेके  
तकी ३ तै तै कित हं चित येपिया रुसे ॥ कि  
धौं नंद नंद मंद मुसि कितु मुरे ३ मन मसे ॥  
१०९ ॥ हे मात्मति हे जाति ज्ञ थके सुनिहित  
दै चित ॥ मान हरन मन हर्न गिरिधर लाल  
लहे ३ त ॥ ११० ॥ हे मुक ताफल वेति धरै मु  
क ताफल माला ॥ देखे है नैन विमाला मोह  
न नंद के लाला ॥ १११ ॥ हे मंदार उदार वीर  
कर वीर महामति ॥ देखे है कहुवल रधीर



मनहरनधीरगति॥ ११२॥ हेचंदनदुषकं  
 दनसवकहेजरतजुदाबहे॥ नंदनंदनत  
 गावंदनचंदनहमहिबतावहे॥ ११३॥ पुष्पहरी  
 शहिलतहिफुल्लिरहीफुल्लनिजोई॥ सुंदर  
 पियकरपरसाविनाप्रसफुल्लनहोई॥ ११४  
 हेसप्रियमगावधुइनहिपुष्पद्रुकिनप्रनुस  
 रि॥ डहडेहइनकेनैनप्रवाहिकहेदेवेहेहरि  
 ११५॥ प्रहोकेदेवप्रहोप्रवनिवक्योरेहम  
 वनागाहि॥ प्रहोवटतंगसुरंगवीरकहेतेइत  
 उतलहि॥ ११६॥ जमुनानिकटकेबिटपवु



कि प्रई निपट उदासी ॥ क्यों कहै हे सखि महा ठि  
न ए तीर्थ वासी ॥ ११७ ॥ हे प्रवनी नवनीत चौ  
रचित चौ रहमारे ॥ राखै है कित हं दु राखता  
रुधौ प्रान पि यारे ॥ ११८ ॥ हे तुलसी कल्या  
नि सदा गोविंद पद प्यारी ॥ क्यों कहै तितु  
नंद सवन सो दसाहमारी ॥ ११९ ॥ जहां अ  
वै तमपं ज कुंज गहवर तरु छाही ॥ अप्रपन्न  
पने मुख चाँदने चलै सुंदरित न माही ॥ १२० ॥  
इह विधि वन घन बुझि टं टि फिरी उन्नत कि  
नाई ॥ करन ल जी मन है रन लाल ली लाम



पंचा  
२५

नभाई ॥ १२१ ॥ मोहन लाल रसा की लीला इन  
ही सौ है ॥ केवल तन सय भई कछु न जान हि ह  
म को है ॥ १२२ ॥ मंगी ग है तें भंग होइ उह की ट  
म हा जउ ॥ क ह्म प्रेम तें क ह्म होइ क ह्म नहि ग्र  
चिर जु बउ ॥ १२३ ॥ न व पाये पिय पद स रोज को षो  
ज रुचि रत हों ॥ अरि दर अंकुस कुलि स कम  
ल ज व ज ग म गा त ज हों ॥ १२४ ॥ जो र ज सि व अ  
ज षो ज त जो ज त जो गी ज न हि य ॥ सो र ज वंद  
न कर न लगी सिर धर न लगी सिय ॥ १२५ ॥ ज  
हों नि र षे टि ग ज ग म गा त प्यारी पिय के प म ॥

२५



चितईपरसपरच कितभई जुरचलीतिहीमग  
१२६॥ प्रागैचलिइकअवलो कीनवपल्लवसै  
नी॥ जहांपियसुसमकुसप्रलैसुहयगुंथीहै  
वैनी॥ १२७॥ जहांपायौइकमंजुमुकरमनिज  
टितविलोले॥ तिहिपुष्पहिबुजवाल्नविरह  
भस्योसोऊनबोलै॥ १२८॥ तर्ककरहिआपमै  
कहोयहक्योंकरनीनौ॥ तिनमैकौइतिन  
केहियकीतिनिउतरदीनौ॥ १२९॥ वैनीगुरु  
नसमैषविलैषेयत्नपाषेवयठेजव॥ सुंदर  
वदनविलोकनसुषकोअंतरभयोतव॥ १३०॥



तातैमंजुलमकरसुकरलैवातलदिषायो  
 ॥ श्रीमुखकौप्रतिविंबसषी तवसनमुखम्रायो  
 १११ ॥ धन्यकरुतभई ताहिनहिनकंफुमन  
 मैकोपी ॥ निर्मत्सरजेसंततिनकीचुडाम  
 शिगोपी ॥ १३२ ॥ इननीकैअप्राएधेहोरैस्वख  
 जेई ॥ तातेअधरसुधाररसपीवतिनिधर  
 कहोई ॥ १३३ ॥ पुनिअगेचलितनकदुरिदे  
 षीसोईठाटी ॥ जोसेंसुंदरनंदकुंवरपियअति  
 वाटी ॥ १३४ ॥ जोरेतनकीजातिफुटिछविछा  
 ३२हीधर ॥ मानहंठाटीकुंवरिसुभगकंचन



अवनीपर ॥ २३५ ॥ तनु घन ते विष्कुरी विजुरी  
 माननितन्य कोष्टे ॥ किधौ चंद सौ रुसि च  
 दि कारहि गइ पाछे ॥ २३६ ॥ नैनन ते तुलधा  
 रहार धोवति धर धावति ॥ भवर उडारन स  
 कति वासवें मुषटि गज्जावति ॥ २३७ ॥ कासि  
 कासि पिय महावाह्ये वदत नत्र केली ॥ महा  
 विरह को धरुनि सुनि ऐवति षगम गवेली ॥  
 २३८ ॥ ध्याइ भुजनि भरिल ईसवनि तै तै उर  
 लाई ॥ मान हं महानिधि पारमथि ज्जाधी  
 निधि पाई ॥ २३९ ॥ तिहिले तहां ते नप्रह रि

स



पंचा०  
१७

बहिरिजमुनातटग्राई ॥ जहां नंदनंदन जग  
वंद नपियत्नाउलडाई ॥ १४० ॥ कहन लगि अ  
हो कुंवर का नरुव ज प्रगट जवतै ॥ अविधि भु  
त इंदिरा अलंकृत रहे तवतै ॥ १४१ ॥ नैन  
मुदिवो महा प्रसूतै हासी हासी ॥ मारत हो  
कंत सुरति नाथ विनु मोल कि दासी ॥ १४२ ॥  
विष जल तै व्याल तै अनल तै दा मिनि ऊरतै  
॥ क्यो राखी नहि मरन दर्शना ग रन ग धरतै ॥  
१४३ ॥ जवतु मज सुदास तन भर पिय प्रति  
इतरा नै ॥ विश्व कुसल कै का ज विधि विन

१७



ती करि आनै ॥ १४४ ॥ अहो मित्र अहो प्रानना  
 थयह अचिर जुभारी ॥ अपननि जो मारिहो  
 करिहो का कीरषवारी ॥ १४५ ॥ जव प्रसुचारन  
 चलत चरनको प्रलधरिवनमें ॥ मिलनतनकं  
 टक अटक कसकत हम रें मनमें ॥ १४६ ॥ प्र  
 नत मनोरथ करन चरन सरोरुह पिय को ॥  
 कहा घटि तै है नाथ हरत दुषहम रें हिय को ॥  
 १४७ ॥ फनी फननि परस्पर पेउर पेनहि ननै  
 कतव ॥ कविति कतिनि परधरत दुरत क्यो  
 को न कुंवर प्रव ॥ १४८ ॥ जानत है हम तुम



जडरतवजराजदलारे ॥ कोमलचरनसरोज  
 उरोजकटोरहमारे ॥ १४४ ॥ सनैसनैधरिहे  
 पियहमहं तोअधि कपियारे ॥ कतअटवीमै  
 अउतगाडततन कर्षअन्यारे ॥ १४५ ॥ अंपरि  
 तुमरीकथामतसंबतापसिगवै ॥ अमराअ  
 मंतकुंतुछिकरैब्रह्मादिकगावै ॥ १४६ ॥ अं  
 परिजिनकीरतुमरोसुंदरमोहनमुखअबलो  
 कोपिय ॥ तिनकीतापनमिटहिरिसिकसं  
 विदकोविदिदिय ॥ १४७ ॥ जोकैसैंहीसाऊ  
 समैमोहनमुखदेख्यो ॥ तोयाविधनाकुइकरी



लै नै न निमै षो ॥ १५३ ॥ इहि विधि प्रेम सुधानि  
 धिमद कंठ गार्ड कलौ लै ॥ विहव लन के गार्ड वाल  
 लाल सो प्रल वलन वौ लै ॥ १५४ ॥ तवति हिं मे  
 प्रगट प्र ए नंद नंद न प्रिय यों ॥ द र्षि बंध करि दु  
 रै वहु रि प्रगटे नट वर ड्यो ॥ १५५ ॥ प्री तव सन व  
 न माल धरे मं जु लन मुरली हथ ॥ मंद मधक  
 र मस कात निपट मन मथ के मन मथ ॥ १५६ ॥  
 पियहि नि र्षिति बंद डुठी सब एक हि वे  
 र यों ॥ फिरि आ ए घट प्रान बहुरि रुग जगो रे  
 द्रि य ड्यो ॥ १५७ ॥ महा कुधित के जस भौ जन







हैमनोरथ पुरन जा कै उप जे जे से ॥ १६२ ॥ ज्यों  
ज्प्रने कजोगे श्वर ही यमै ध्यान धरत है ॥  
स्फुट ही बेर ३ क मुरति सब को सुष वितरत  
है ॥ १६३ ॥ कोटि कोटि ब्रह्मांड ज द पि र कि  
लीठ कणै ॥ ब्रज दे विनि की सभा सांव रै  
अति च विपारै ॥ १६४ ॥ सब सुंदरि तैं सनम  
ष सुंदर स्था म विराजै ॥ ज्यों नव दल मंडल  
मै कमल कर्नि का भ्राजै ॥ १६५ ॥ वृज नल  
गी नवल वात्म नंद त्मा त्म प्रिय हितै व ॥ प्री  
ति रीति की बात मन मै मस कोत जाति स



व॥ १६६॥ ३ क म ज ते कुं म ज हि वि न हि म  
 ज ते ३ क म ज ही॥ क हो कां न ते क व न ग्रा  
 हि जे दु ह व नित ज ही॥ १६७॥ ज द पि ज ग त ग  
 रु ना ग र न ग ध र न द दु त्मा रे॥ गो पी यि न के  
 प्रे म के न्ना गे न्ना प नै ही म उ हारे॥ १६८॥ त व  
 वो लै वृ ज रा ज कुं व र हों रि नी तु ह्मा रे॥ अ प  
 नै म न त दुरि क रो य ह दो ह्मा रे॥ १६९॥  
 को टि क ल गि तु म प्र ति प्र ति उ प ग रा क रों  
 जौ॥ हे म न ह र नी तर नी न्प्र रि नित गु न हों  
 तौ॥ १७०॥ स क ल वि श्व अ प व स की मो मा



या मोहति है ॥ प्रेम मयी तु म्हरी प्राया मोहि  
 मोहति है ॥ १३१ ॥ सुनि प्रिय केर सब चन स  
 वनि गास छाडि दयो है ॥ विदुसि न प्रप प्रप  
 नै कंठ नि त्ना तल गा डल यो है ॥ १३२ ॥ कोटि  
 कल पत रुव सतल सुत पद पं कजु चाही  
 काम धेनु पुनि कोटि कोटि विलुट तरु  
 माही ॥ १३३ ॥ सो प्रिय भए प्रनु कुल तुल को  
 तुन भयो प्रव ॥ निरवाधी सुष के मुल सुल  
 तुल कशी सब ॥ १३४ ॥ अपार भित प्रद्रुत स  
 रास उहि कमल चक पर ॥ निमित्त न किंत



पंच०

२१

हं होउ सवै न त क वि चित्र वर ॥ १५ ॥ न व म र क  
त म नि स्या म क न क म नि ग न व ज्ज वाला ॥ बं द  
व न के हं रि मि म नु हं प हि रा र मा ला ॥ १६ ॥  
नु प र कं क ण किं क नि क र त त मं ज तु ल म  
ली ॥ ता त म दं ग उ पं ग चं ग ए क हि स र ज्ज  
ली ॥ १७ ॥ मृ दु ल म र ज्ज टं का र ता ऊं का र मि  
ली ध नि ॥ म र्क र जं व की चार भ व र ऊं का र  
र ली पु नि ॥ १८ ॥ तै सि यो मृ दु ल प द प ट क नि  
च ट कं नि क ट तार नि की ल न ट क नि म ट क  
नि ऊ ल क नि क ल कुं ड ल हार नि की ॥ १९ ॥

२१



सांवरैपिय संगानृततिवृज कीचंचलवाला  
 ॥ जनु घनमंडलमें जतलषलतिदामिनिमा  
 ला ॥ १२० ॥ ॥ विलितितियनकेग्राफपा है वि  
 ललितवेनी ॥ चंचलरूपलतनिसंगडोल  
 तिजनुअलिसैनी ॥ १२१ ॥ मोहनपियकीम  
 ल्लकानिऊलकनिमोरमुकटकी ॥ सदा  
 वसोमनमेरैफरकनिपियरैपटकी ॥ १२२  
 केइसवि कश्यतिरपवांधिनृततिफविली  
 तिय ॥ मानुहंकरतलफिरतलटुदेधिल  
 दुहोतपिय ॥ १२३ ॥ केईनाइककेभेदभाव



पंच०  
२२

ल्लावनारूपसब ॥ प्रभिनयकरिदिषण  
वतगावतगुनपियके जव ॥ १२४ ॥ तवना  
ग रनंदलालन चाहिचितचकितहोतये ॥  
निजपूतिबिबवित्नासनिरषिसिसुभुतिर  
हेतल्यो ॥ १२५ ॥ पीरिपर सपरवारतअंबर  
अभरनअंगअंगके ॥ अवरतवाहिवनिर  
हेततहाअप्रदुतरंगरंगके ॥ १२६ ॥ कैईमुर  
लीसुरलीय रंगिलीरंगहिबठावति ॥ कै  
ईमुरलीकौंकेकिफवीलीअप्रदुतगावति ॥ १  
२७ ॥ ताहिसावरेकुबररीरिहसिलेतभुज

२२



नभरि॥ चंदन करि सुष सदन वदन ते देत  
तं वोरठरि॥ १२८॥ जग मै जो संगीत नृत्यति सु  
रन ररी ऊत जिहि॥ जो वृ जति यनि कौ सह  
जग वन प्राग मगावत तिहि॥ १२९॥ रागरा  
गनी समतिन को वो लि वो सुहायो॥ सुक  
वनः पै कहि प्रावे जो वृ ज दे वी निगायो॥ १३०॥  
मीव मीव भु ज मै लि के लि कमनी यवठी  
प्रति॥ लट किलट कि वह नृतति का पै क  
हि प्रावे गति॥ १३१॥ जो क श समंदुत मै  
वृ ज जुवती निवृत्त की नौ॥ सुक वन पै क



पंच०

२३

हिःप्रावैजिनिहरिवकरिलीनै॥ १४१॥ ३६  
अप्रुततरसरह्योरासगीतधकनिस्तुनिमोहे॥  
मुनि॥ सितलासलितलकेचतनीसिलितलसि  
लाहोदगारुपुनि॥ १४३॥ पवनथक्या॥ स्स  
थक्याथक्याउदमंडलसगरो॥ पाँकेरवि  
थथक्याचल्योनहिःप्रागेदगरो॥ १४४॥ री  
फिसरदकीरजनीनजनीकितीकवाढी॥  
विलसतसजनीस्यामजथारुचिःप्रतिरति  
वाढी॥ १४५॥ इहिविधिविविधिविल्लासवि  
लसिस्तुषकुंजसदनके॥ चलेहैजमुनजल



क्रीडन ब्रीडन कोटि मदन के ॥ १४६ ॥ उरसि।  
मरग जीमातु चातु मदग जजि ममल कत  
धुमतरस मरे नैन गंद स्यल मम फल कत  
१४७ ॥ जाइ जमनु जल धसल सेक विप  
रति नवरनी ॥ विहरत मानौ गजर जसंग  
लिइत रनी करुनी ॥ १४८ ॥ तियनि केत  
न जल मगन वदन जहां यों कवि क्यार ॥  
फुलै है जल जमन कनक के क मल मुहा  
र ॥ १४९ ॥ मजुल अंजुलि मरि मरि पि  
य कौं तिय जल मलति ॥ जनु प्रलिसौं अ



पंच०  
२४

रिवुंदवुंदमक रंद निषेत्नति॥२००॥ यह  
उप्रद्रुतरसासकहतकफुकहिनहिउप्रा  
वै॥ सैनकसनंदननारदसारदप्रतिही  
भावै॥१॥ सेससहस्रमुषगावैउप्रजहंउप्रन  
नपावै॥ सिवमनिहीमनध्यावैकोहिनहि  
नजनावै॥२॥ जदपियदकमलाम्रमिता  
सेवतिहेदिन॥ यहरसउप्रपनैसपनैकव  
हिनहिप्रायोतिन॥३॥ अजउप्रजहंरजवंद  
तसुंदरवुंदावनकी॥ सोतनककहिनहिपा  
वतसुत्तमिटतनहिमनकी॥४॥ विनिउप्र

२४



धि कारि भउ नहि नवुं दावन सुमे ॥ रेन कहों ते  
 सुमे जव तल गव सुन वुमे ॥ ५ ॥ निपट निक्क  
 घट मे ज्यों उपंतर जामि अप्राही ॥ विषय विदु  
 धित इंद्रिय प्रकरि सवै नहि ताही ॥ ६ ॥ जो  
 यह लीला गावै हित सौं सुनै सुनावै ॥ प्रेम प्र  
 गति सो पावै अरु सब कै जिय भावै ॥ ७ ॥ हि  
 न अहानिंद कनासि कहारि धर्म वहिर्मुष  
 ॥ तिन सौ कवहुं न कहैं कहैं तो नहि नल  
 हे सुष ॥ ८ ॥ भग तजुनिन सौं कहैं जिन कै भा  
 गवत धर्मवत् ॥ ज्यों जमुना के मीन लीन नि



तरहततजमनुजतल॥१०॥ जदप्यसपुनिधि  
 मेदिनिजुतमनुनिगमवषाने॥ तैतहिध्या  
 रहिधाररमतजतलकुवतनऽप्राने॥१०॥ य  
 हुउजलरसमालाकोटिजतनकरिपोई॥ सा  
 वधानैकेपहेरैपहेरैतोरेमतकोई॥११॥ अ  
 वनकीतैनसारसारसुमिरनकोहैपुनि॥  
 ज्ञानसारहारध्यानसारश्रुतिसारगुणी  
 गुनि॥१२॥ अथहरनिमनहरनीसुंदरप्रे  
 मवितरनी॥ नंददासकैकंठवसोनितमंग  
 लकरनी॥१३॥ इतिश्रीपंचार्धभाषानंद॥



पंच०

२६

इति श्री॥ पंचा॥ ध्याई॥ भाषा॥ नंद॥ दास॥ जी॥  
कृतं॥ संपु॥ पूर्ण॥ सुभ॥ मस्तु श्रीमदन॥ गोपा॥  
लयनम॥ संवत्॥ १८३१॥ मिति॥ मगश्र॥ व  
दि॥ १॥ न॥ कस्मपद्दे॥ लिखेतं॥ वृत्तात्नीराम  
विरामण पाटनमित्तारथे श्रीपं  
च्याध्याई भाषा नंदं साके श्रीश्रीश्री दा  
कस्मायनमः श्रीरक्षा कस्मायन  
मः

दा

२६



पञ्चाध्यायी  
नन्दादास कृत।

Acc. No. → 50596.



